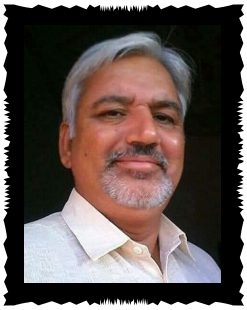

राजपाल सिंह गुलिया

गीत

देख हमारी ये नादानी

जल में रहकर देखो हमने,
हरदम किया मगर से बैर.
हो शब्बा ख़ैर.

गिनते रहते दिन में तारे,
दिखा गया जो रामदुलारे.
देख हमारी ये नादानी,
डूब गए हम बिन ही पानी.
निकल गए बाकी सब तैर.
हो शब्बा ख़ैर.

जिसने हमसे लेकर खाया,
सदा वही हम पर गुर्राया.
लोकाचार नहीं कुछ जाना,
उन बातों को ही सच माना.
बातें जो थी बिन सिर पैर.
हो शब्बा ख़ैर.

अंधों के बन काने राजा,
भुगत रहे हैं ये ख़मियाजा.
छोड़ गए सब जो थे अपने,
संग खड़े वो मरने - खपने,
समझ रहे थे जिनको ग़ैर.
हो शब्बा ख़ैर.

हर हसरत रही अधूरी

रखकर भूले जिसे ताक पर,
वही दीप हम अलबेले.
अनदेखी को झेल - झेल कर,
जो जलते रहे अकेले.

झोंका एक हवा का हमसे,
बैठा है मुँह की खाए.
जवां अँधेरा भागा देखो,
अभी अपनी दुम दबाए .
स्नेह भरी ये दीपवर्तिका,
नित्य ज्वाला संग खेले.

लौ ने लगकर घोर तमस को,
हर कोने से साफ किया.
रवि किरणों को पाकर जन ने,
हमसे कब इंसाफ किया,
अहंकार की एक फूँक से,
मिटे रोशनी के मेले.

मान मिला ना हमें अपेक्षित,
हर हसरत रही अधूरी.
देख लालिमा बढ़ा गए क्यों,
जन हमसे इतनी दूरी.
आकर सूरज ने मिटा दिए ,
उजियारे के वो रेले.